सर्व शिक्षा अभियान, छत्तीसगढ़ जुलाई, 2015 अंक- २

संकुल स्त्रोत केन्द्रों में मासिक बैठक हेतु चर्चा के बिंदु

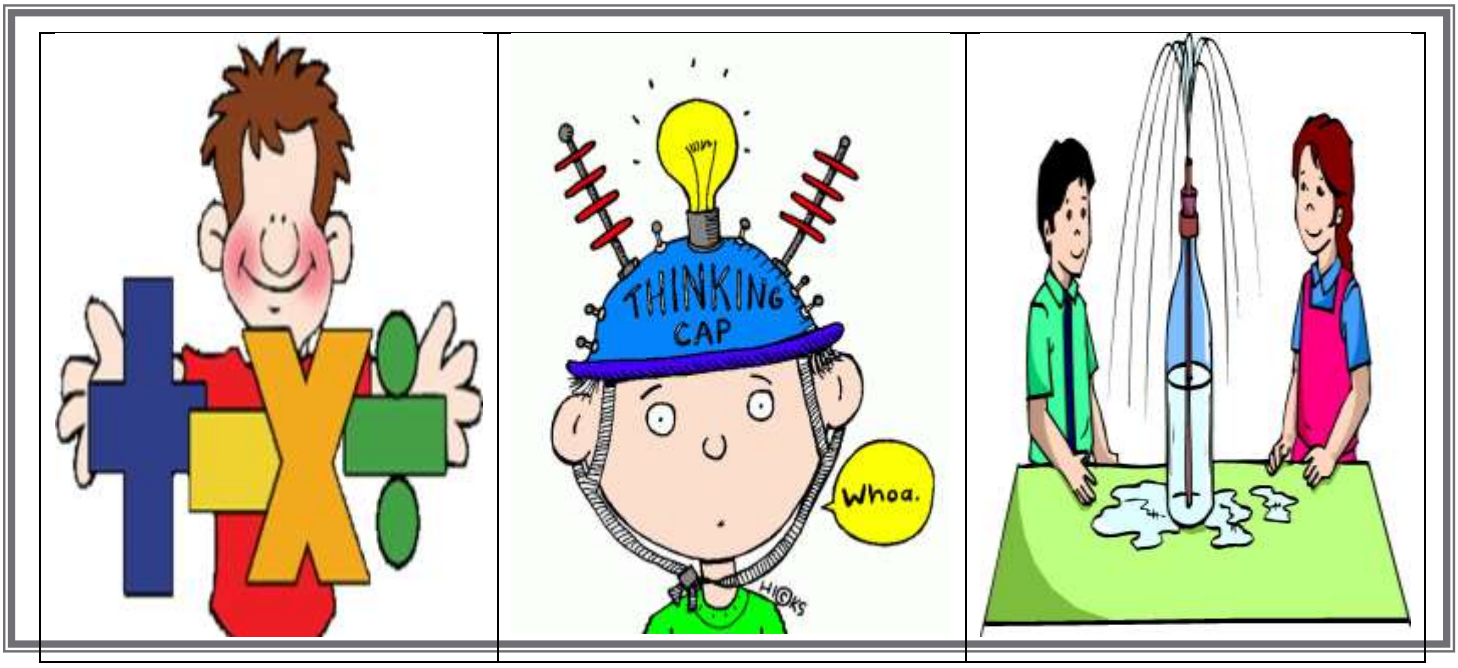

राज्य परियोजना कार्यालय, राजीव गांधी शिक्षा मिशन
छत्तीसगढ़
संपर्क हेतु ईमेल - mis.head@gmail.com

आमुख

माह जून, 2015 के संकुल बैठकों के लिए चर्चा पत्र जिले से संकुल तक पहुँचाने में विलंब होने की जानकारी मिली | अभी भी बहुत से संकुलों में ये चर्चा पत्र उपलब्ध नहीं हो पाए हैं | ऐसा सिस्टम बहुत माहों बाद शुरू होने की वजह से जानकारियों के निचले स्तर तक पहुँचने में विलंब हुआ है | एक बार सिस्टम बन जाने के बाद शायद ऐसा न हो | राज्य स्तर से भी माह जून की बैठक हो जाने पर ही जुलाई का अंक भेजने की प्रतीक्षा की वजह से कुछ विलंब हुआ है |

मुंगेली जिले ने इस बार संकुल स्तरीय प्रशिक्षणों का दौर सबसे पहले पूरी कर राज्य परियोजना कार्यालय को सूचित किया | मुंगेली एवं बिलासपुर जिलों के कुछ संकुलों से हमने चर्चा कर एवं कुछ संकुलों का भ्रमण कर इन चर्चा पत्रों की सार्थकता एवं स्कूलों में बदलाव का अध्ययन किया | स्कूलों में अभी कुछ और काम किए जाने की आवश्यकता प्रतीत हुई | कुछ संकुल समन्वयक स्वयं ही इन बिन्दुओं पर चर्चा करते पाए गए जबकि उन्हें इस हेतु एक कुशल समूह तैयार करना था, कहीं फोटोकापी स्पष्ट नहीं थी तो कहीं कहीं स्कूलों में इन बिन्दुओं पर बहुत से कार्य होते हुए दिखाई दिए | आगे के माहों में इन सभी बिन्दुओं पर बहुत कार्य होने की पूरी उम्मीद दिखाई दे रही है |

आप इस बात से सहमत होंगे कि संकुल स्तर तक बहुत सी अकादमिक जानकारियाँ नहीं पहुँच पाती और कई बार जिस मंशा से कोई कार्य सौंपा या सोचा जाता है, नीचे पहुंचते पहुंचते उसका अर्थ एवं उद्देश्य बदल जाता है | इन चर्चा पत्रों के माध्यम से इस कमी को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है | संकुलों में चर्चा पत्र के माध्यम से शिक्षकों के साथ अकादमिक चर्चाओं के आयोजन में भी मदद मिल रही है, ऐसा बहुत से संकुल समन्वयकों ने बताया है | आप सभी के सुझाव से इन चर्चा पत्रों को आपके लिए और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आवश्यक प्रयास किए जाएंगे |

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद में आयोजित संकुल समन्वयकों की बैठक में भी हमने विभिन्न स्तरों से स्त्रोत केन्द्रों के माध्यम से शालाओं में अकादमिक समर्थन के बारे में जानने का प्रयास किया गया | वर्तमान परिदृश्य में संकुल समन्वयक मुख्यतः विकासखंड शिक्षा अधिकारी के निर्देशन में कार्य करते दिखाई दे रहे हैं | उनके व्दारा माह में एक बार ही अधिकतम एक स्कूल का भ्रमण किया जाना बताया गया | संकुल समन्वयक अपने मूल कार्य अकादमिक सुधार एवं शिक्षकों को आन-साईट मार्गदर्शन को छोड़कर अन्य गैर-शैक्षणिक कार्यों में लगे हुए हैं | उनसे न केवल शिक्षा विभाग वरन अन्य विभाग भी जमीनी जानकारी लेने देने का कार्य ले रहे हैं और इन्हीं कार्यों में संकुल समन्वयकों की उर्जा व्यर्थ हो रही है | संकुल समन्वयक का ज्यादा संपर्क विकासखंड एवं जिला शिक्षा अधिकारियों से हो रहा है और वे जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों से दूर होते जा रहे हैं |

शालाओं में गुणवत्ता लाने के लिए इन स्ट्रक्चर को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के नजदीक होना चाहिए | जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की ओर से संकुलों को अधिक से अधिक गुणवत्ता सुधार संबंधी कार्यों को सौंपते हुए उनके माध्यम से स्कूलों की दशा और दिशा सुधारने का प्रयास करना चाहिए | इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर इस बार **संकुल समन्वयक के लिए Job Chart** भी तैयार किया गया है जो मिशन के वेबसाईट में उपलब्ध कराया गया है |

आशा है आगे के दो चार माहों में संकुलों में अकादमिक चर्चाएँ जोर पकड़ने लगेंगी और स्कूलों में बच्चों की उपलब्धि में सुधार दिखाई देने लगेगा | आप भी इन चर्चा पत्रों को विस्तार एवं बारीकी से पढ़कर चर्चाओं में आयोजन हेतु कुशल टीम बना रहे होंगे एवं उन्हें विभिन्न बिन्दुओं को समझाने एवं चर्चाओं के आयोजन एवं स्कूलों में फालो अप की जिम्मेदारी दे रहे होंगे | उम्मीद ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि गत माह मासिक बैठक के आयोजन के दौरान आपको अकादमिक चर्चाओं के लिए इस चर्चा पत्र से काफी मदद मिली होगी | शिक्षकों के साथ आपने अपने संकुल की शालाओं में सुधार के लिए ठोस योजनाएं बना कर उन्हें क्रियान्वित कर रहे होंगे | हम आपकी बैठकों में अधिक से अधिक शामिल होने का प्रयास करेंगे |

इन्हीं आशाओं के साथ !

चर्चा क्र. १: गत माह के चर्चा के बिन्दुओं की समीक्षा:

१. गत माह आपने चर्चा के दौरान बच्चों की दर्ज संख्या में कमी एवं निजी विद्यालयों की ओर आकर्षित होने के कारणों को जानने की कोशिश की | इन ग्लोबल बिन्दुओं पर आपने लोकल स्तर पर क्या क्या एक्शन लिए ?

२. आपने अपने बच्चों की उपलब्धि भी आंकने की कोशिश की होगे | कक्षा ९वीं में अध्ययनरत बच्चों की कक्षा ८ तक के अवधारणाओं की जांच करने पर उपलब्धि बहुत ही कम आ रही है | आप अपने समीप के हायर सेकंडरी स्कूल से इस संबंध में रिपोर्ट ले सकते हैं | आपने अपने स्कूलों में बच्चों की उपलब्धि सुधारने के लिए क्या क्या प्रयास करना शुरू किया है ?

३. गत माह आपको प्रत्येक शाला में न्यूनतम १० बिन्दुओं को लागू करने का सुझाव दिया गया था | जिसमें रीडिंग कार्नर से लेकर गन्दगी के निपटारे के लिए प्रत्येक कक्षा में डस्टबिन की व्यवस्था किए जाने का सुझाव था | इस संबंध में स्कूलों में अवलोकन के दौरान क्या स्थिति थी और अभी क्या स्थिति है ? इतना न्यूनतम सभी को करना होगा और इस हेतु आवश्यक निर्देश एवं प्रोत्साहन देवें |

४. "स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय" कार्यक्रम के अंतर्गत आपको बच्चों में ऐसी आदतें जिनसे उनका पीछा छुडाना अत्यंत आवश्यक है और इस हेतु शिक्षकों को एक्शन रिसर्च के लिए भी सपोर्ट एवं प्रोत्साहित किए जाने की व्यवस्था करें | एक्शन रिसर्च के लिए आप अपने संकुल के विद्यालयों में से "हर ताले की चावी" खोजें और उस आधार पर शिक्षकों को आवश्यक सहयोग दे सकते हैं | गावों में "स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय" से संबंधित कुछ नारे भी लिखवाया जाना सुनिश्चित करेंगे |

५. प्राथमिक स्तर पर बच्चों को प्रिंट रिच वातावरण देने आपको लगभग 50 नाम सुझाए गए थे जिन्हें स्कूल परिसर में उन वस्तुओं के बगल में हिंदी, अंगरेजी एवं स्थानीय भाषा में लिखकर बच्चों को उनकी पहचान करने एवं पढ़ने के लिए समझ बनानी थी | यह कार्य किन-किन शालाओं में हो गया और जहां नहीं हुआ वहां तत्काल समय सीमा देकर करवाएं | इसी प्रकार प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए शिक्षकों का समूह कुछ प्रयोग तैयार करें और उन्हें स्कूलों में नियमित रूप से आयोजित करें | शालाओं में गुणवत्ता सुधार के लिए Professional Learning Community (PLC) के गठन किए जाने की भी सहमति बनाकर उनका गठन किया जाना था |

६. आपके संकुल में सक्रिय शिक्षण के कुछ मौलिक उदाहरण ढूंढकर आपस में एवं राज्य परियोजना कार्यालय को भेजा जाना था | इस दिशा में कार्य करते हुए प्राप्त जानकारी का कक्षा अध्यापन में नियमित उपयोग किया जाना सुनिश्चित करें |

७. सभी शालाओं में बच्चों को कागज़ से खेल खिलौने बनाना, नियमित रूप से डिक्टेशन/ इमला लिखवाना, स्वतंत्र एवं मौलिक लेखन के लिए विषय देना, सामान्य ज्ञान के प्रश्न आदि देने के संबंध में हुई प्रगति से अवगत कराने की व्यवस्था करें |

८. गत माह हमने महासमुंद के श्री ओम नारायण शर्माजी व्दारा बनाए गए अकादमिक कैलेण्डर की जानकारी दी थी | आपमें से कुछ लोगों ने उनसे मोबाइल से संपर्क भी किया और इसकी जानकारी ली | ओमनारायण शर्माजी अब संकुल समन्वयक से पदोन्नत होकर विकासखंड स्त्रोत समन्वयक का दायित्व निभा रहे हैं | बधाई!

९. आपको बच्चों के लिए स्थानीय भाषा में सामग्री, विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञ शिक्षकों की सूची एवं उन्हें आपस में जोड़ना, कुछ टीचिंग टिप्स शेयर करना था | इन क्षेत्रों में क्या क्या कार्य हुआ ?

१०. आपको अपने संकुल में किए जा रहे कुछ नवाचारों की जानकारी शेयर करनी थी | क्या आपने कुछ नया नहीं किया या हमें भेजना नहीं चाहते ?

शालाओं की उपरोक्त बिन्दुओं में समीक्षा के दौरान संकुल समन्वयक अपने संकुल की शालाओं से उपरोक्त बिन्दुओं पर पर्याप्त साक्ष्य एवं मोबाइल से फोटो भी दिखाए जाने को प्रोत्साहित करें |

रीडिंग कार्नर को बेहतर बनाने एवं उनके नियमित उपयोग किए जाने को प्रेरित करें | स्थानीय भाषा में किस प्रकार की सामग्री आपने बनाई है और आगे बनाने के लिए आपके पास क्या आइडियाज और स्त्रोत संसाधन उपलब्ध हैं ? शाला अनुदान से आपने प्रत्येक कक्षा के लिए डस्टबिन क्रय कर रखवा लिया होगा | इसी प्रकार गत चर्चा पत्र के आधार पर गतिविधियाँ एवं सभी पहलुओं में आवश्यक जानकारी आपने एकत्रित कर ही ली होगी |

उम्मीद है कि इन बैठकों को गंभीरता से लेते हुए अकादमिक मुद्दों पर चर्चा एवं समय-सीमा के भीतर समस्त आवश्यक कार्यवाहियां किए जाने की संस्कृति शीघ्र प्रारंभ हो जाएगी | अब हम बच्चों के उपलब्धि के मामले में और अधिक पीछे नहीं रहेंगे| हम सब मिलकर इसके लिए प्रयास करें |

चर्चा क्र. २: आरटीई वाच प्रथम चक्र अस्सेसमेंट रिपोर्ट

प्रदेश के 18 जिलों के 560 स्कूलों में आरटीई वाच कार्यक्रम के अंतर्गत माह जनवरी से मार्च 2015 में कक्षा 3 के 2884 बच्चों और कक्षा 5 के 3559 बच्चों के बच्चों की अकादमिक स्तर जानने हेतु मूल्यांकन किया गया | 486 स्कूलों से प्राप्त हिंदी और गणित विषय के चौंकाने वाले परिणाम इंगित करते है की शिक्षकों के साथ, पढ़ाने की पद्धति, बच्चों को पढ़ाने के दौरान जांचने (सतत मूल्यांकन) को काफी गहराई से समझने और इस पर मासिक बैठकों में गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकता है | परिणाम बताते है की कक्षा 3 के सिर्फ 32.91 % विद्यार्थी ही पूर्ण रूप से स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर और मात्रा की समझ रखते है | इसी दक्षता में 48.9 % बच्चे ऐसे है जो आधी अधूरी समझ रखते है जैसे यदि स्वर के कुछ अक्षर जानते है तो व्यंजन में दिक्कत या व्यंजन के कुछ अक्षर जानते है तो मात्रा में या संयुक्ताक्षर में अपूर्ण ज्ञान | इन क्षेत्रों को शिक्षकों को देखना होगा और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से कक्षा में बच्चों के समूह शिक्षण बढ़ावा देना होगा |

(समूह शिक्षण - बच्चों के स्तर के अनुसार सजातीय या विजातीय Homogeneous or heterogeneous एक जैसे स्तर वाले का समूह या विभिन्न स्तर वाले बच्चों का समूह निर्माण)

गणित का कक्षा 3 का परिणाम बताता है की सिर्फ 3.88 % बच्चे ही दो एवं तीन संख्या में एक संख्या का भाग दे पाए| इन बच्चों में 29.72 % बच्चे ऐसे थे जो कुछ हद तक भाग की प्रक्रिया को सही कर पाये, 55.62 % बच्चों द्वारा पूर्ण रूप से गलत प्रयास किया गया, और शेष 10.78 % ने प्रयास करने की कोशिश ही नहीं करी | जोड़ने, घटाने और गुणा करने के सवालों में भी कुछ लगभग इसी प्रकार के परिणाम प्राप्त हुए जिसमे 40 से 50 % बच्चों द्वारा गलत प्रयास और 10 % तक बच्चों ने सवालों को करने की कोशिश नहीं की | यहाँ सबसे ध्यान देने वाली बात यह है की हमारे ऐसे बच्चे जो आधा अधूरा प्रयास करते है या जो बिलकुल भी प्रयास नहीं करें उनकी और ध्यान देकर हम हमारे अकादमिक परिणामों को अच्छे स्तर तक ले जा सकते है |

कक्षा 5 के हिंदी के परिणाम में 45.13 % बच्चे कहानी को समझ सभी वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सही उत्तर दे पाए, 31.1 % बच्चे कुछ प्रश्नों के सही उत्तर और 22.25 % बच्चों ने सभी विकल्पों का गलत उत्तर दिया | इन बच्चों में से 1.52 % बच्चों ने तो प्रयास भी नहीं किया | इसी प्रकार गणित में बहुत ही चिंताजनक स्थिति देखी गयी | जोड़, घटाव, गुणा, भाग, संख्या क्रम, चिन्ह का उपयोग, भिन्न, दशमलव, आकृति, समय और संक्रियाओं के व्यवहारिक उपयोग के सवालों को औसतन सिर्फ 33 % बच्चे ही सही हल सकें | अलग अलग दक्षताओं में लगभग 11 % से 67 % तक ऐसे बच्चे थे जिन्होंने विकल्पों का गलत प्रयास किया और चिंताजनक विषय यह है की लगभग 13 % तक ऐसे बच्चे भी है जिन्होंने कुछ भी प्रयास नहीं किया |

सम्पूर्ण स्थिति में देखा जाए तो हमारी कक्षाओं में लगभग 15 % अभी भी ऐसे बच्चे है जो कुछ प्रयास नहीं करते और शिक्षकों को इस विषय को गंभीरता से लेना होगा | 30 से 45 % ऐसे बच्चें है जिनके साथ यदि कुछ रणनीति के साथ कार्य किया जाए तो इन बच्चों के अकादमिक स्तरों को पूर्ण दक्ष स्तर तक लाया जा सकता है, बशर्ते शिक्षक इनकी पहचान करें और रणनीति के साथ गतिविधियों के माध्यम से इस पर कार्य करें?

संकुल बैठक में चर्चा कर पता करें कि आपकी संकुल की शालाओं में बच्चे पूरे सवाल हल कर रहे हैं या नहीं यदि वे प्रश्नों के सवाल नहीं करते हैं तो उसके संभावित कारण क्या क्या हो सकते हैं ? क्या बच्चे यह अपेक्षा करते हैं कि उनके शिक्षक अवसर पाकर सवालों के जवाब बताने में मदद करते हैं ? और कोई कारण?

कुल सेम्पल ... 2908 ...

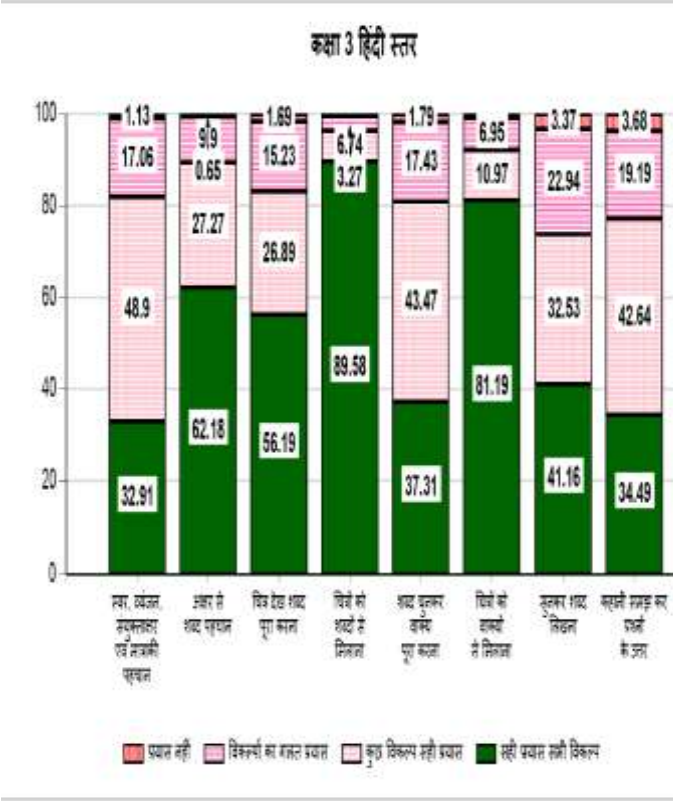

कुल सेम्पल ... 3559 ...

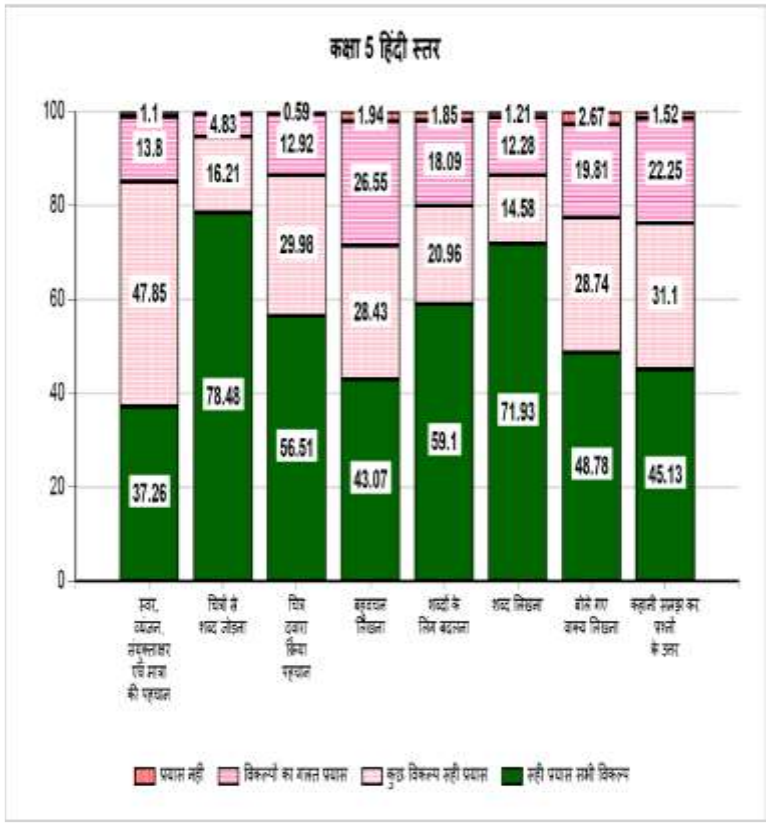

कुल सेम्पल ... 2884 ...

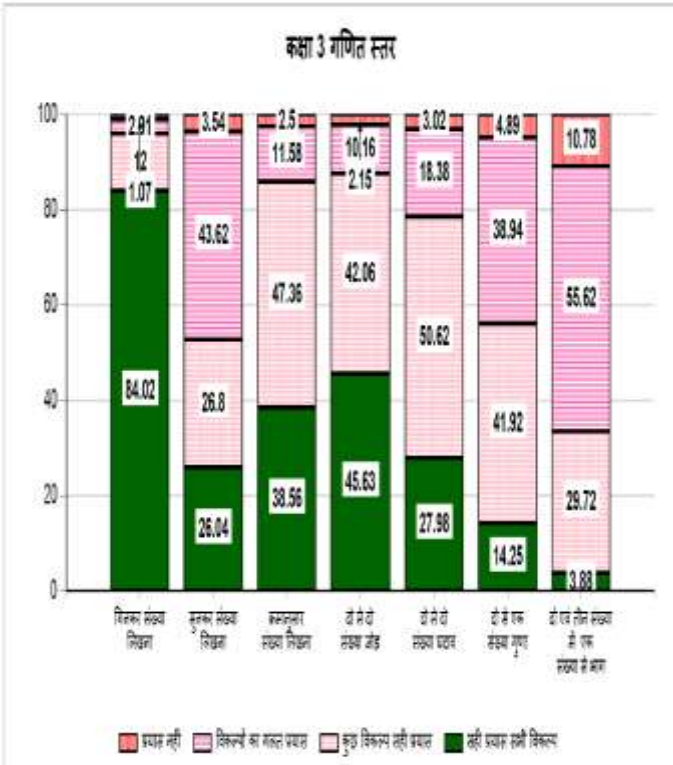

कुल सेम्पल ... 3528 ...

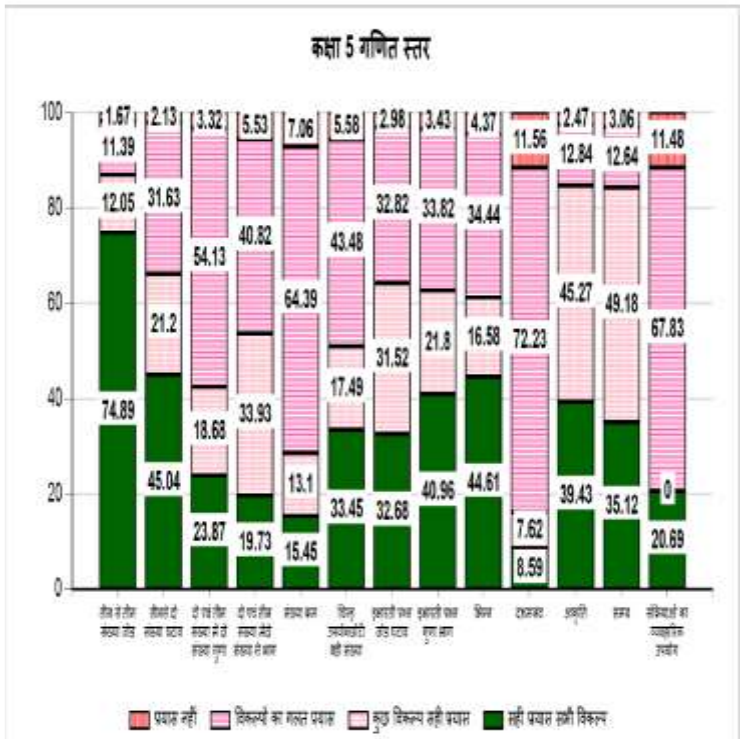

चर्चा क्र. ३: कहानी – "सफाई की सीख"

"मूंगफली ले लो मूंगफली! ताजी गरम मूंगफली" वह ट्रेन के डिब्बों में आवाज लगाता जा रहा था और लोगों को मूंगफली खिलाता जा रहा था | दस रूपए में वह अखबार के रद्दी कागज की पुडिया में लपेट कर मूंगफली देता था और साथ में अपनी ओर से एक और खाली पुडिया भी बांटता चला जा रहा था | पालीथीन से उसने परहेज कर रखा था |

देखने से वह बिलकुल पढ़ा-लिखा नहीं लग रहा था पर उसने कपडे साफ़-सुथरे पहन रखे थे, नाखून एवं बाल सलीके से कटे हुए थे | जब किसी ने उससे मूंगफली के साथ खाली पुडिया देने के बारे में पूछा तो उसका जवाब हम पढ़े-लिखे लोगों के लिए आँख खोलने वाला था |

उसका जवाब था, "मेरा बहुत सा समय रेल में बीतता है| मेरी पेट भी इसी रेल की वजह से भरती है | इसे साफ़ रखना मेरी भी जिम्मेदारी है | यदि मैं आपको मूंगफली बेचता हूँ और आप उसे खाकर उसके छिलके इधर उधर फेंक देते हो तो इससे रेल में गन्दगी फैलेगी जिससे बीमारी होगी | मैं यह कोशिश करता हूँ की मेरे कारण यह रेल गन्दी न हो और कोई दूसरा भी इसे गंदा करने का प्रयास न करें | "

सफाई हम सबकी जिम्मेदारी है |

शिक्षकों को यह कहानी अपने बच्चों को सुनाने हेतु प्रेरित करें | स्वच्छ विद्यालय के लिए और क्या क्या किया जा सकता है ताकि बच्चों में शुरू से ही इस बाबत जागरूकता रहे ?

क्या बच्चों में ऐसी अच्छी आदतें डालने के साथ-साथ उनके माध्यम से समाज में भी ऐसी शिक्षा देने का प्रयास किया जा सकता है ? कैसे ? चर्चा करें ?

अपने संकुल के कुछ विद्यालयों को **"आदर्श स्वच्छ विद्यालय"** के रूप में विकसित करने की दिशा में सोचें| शिक्षकों के साथ मिलकर यह जानने का प्रयास करें कि प्रथम चरण में आप कितने और किन-किन स्कूलों में यह कार्य प्रारंभ कर सकते हैं | "आदर्श स्वच्छ विद्यालय" की परिकल्पना करते समय आप किन किन बातों को ध्यान में रखना चाहेंगे ? कुछ बातें इस प्रकार हो सकती हैं:

- स्वच्छता इकाई (शौचालय/ मूत्रालय)
- सामूहिक हाथ धुलाई व्यवस्था
- स्वच्छ पेयजल
- संचालन एवं नियमित रख-रखाव
- स्वभाव में अपेक्षित परिवर्तन

चर्चा क्र. ४: मुखौटे बनाना

अपने संकुल के किन्हीं ऐसे शिक्षक जिन्हें मुखौटे बनाने में दक्षता हासिल हो को बैठक में कुछ मुखौटे और बैठक में कुछ मुखौटे बनाने का प्रदर्शन करने एवं सभी शालाओं के लिए मुखौटे बनाने के लिए पर्याप्त सामग्री स्कूलों को लाने हेतु या मिलकर आपस में व्यवस्था करने हेतु निर्देशित किया जा सकता है ताकि सभी स्कूलों में कुछ मुखौटे उपलब्ध हो सकें |

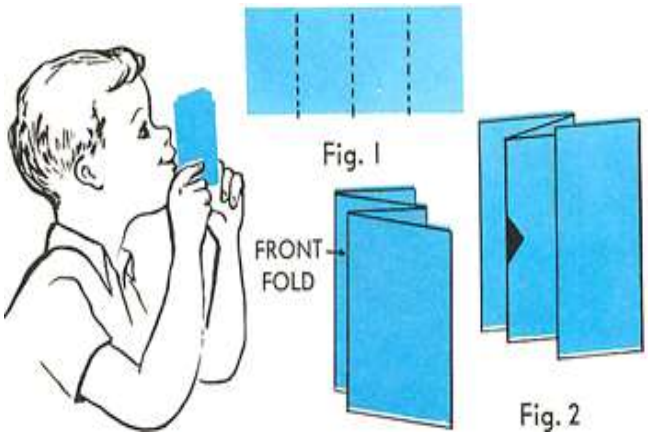

इस प्रकार मुखौटे तैयार कर बच्चों के साथ कौन-कौन सी गतिविधियाँ हो सकती हैं? क्या हम ऐसी गतिविधियों से बच्चों के संवाद कौशलों को विकसित कर सकते हैं?

चर्चा क्र. ५ : विज्ञान के प्रयोग

गत माह के चर्चा पत्र में आपको बच्चों के साथ कागज़ के खिलौने बनाने के सुझाव दिए गए थे | इस बार आपको इस चित्र में एक खिलौना बनाने की विधि दर्शाने का प्रयास किया जा रहा है | इस प्रकार से खिलौने बनाने से आप बच्चों से आवाज निकालने को दे सकते हैं | आप अपने शिक्षक साथियों के साथ संकुल की बैठक के दौरान यह खिलौना बनवाएं और सभी को अपना बचपन याद करने को कहें | इसी प्रकार के अन्य खिलौने एक दूसरे को सिखाने के अवसर प्रदान करें | इस माह आप शिक्षकों एवं बच्चों को कागज़ या अन्य किसी वस्तु से आवाज निकालने वाले विभिन्न खिलौने बनाने का कार्य दे सकते हैं | ये सभी कार्य सभी शिक्षकों को अपने स्कूलों में भी बच्चों के साथ करने और खेलने को प्रेरित करें | आपके संकुल के शिक्षकों व्दारा बनाए जा रहे कुछ नए खिलौने हमारे साथ भी शेयर करें ताकि हम उसकी जानकारी शेष शिक्षकों के साथ भी शेयर कर सकें | आप इस हेतु सन्दर्भ सामग्री भी तैयार कर आपस में शेयर कर सकते हैं |

चर्चा क्र. ६: खिलौनों के पीछे का विज्ञान

इस बार आपसे मिलवाते हैं – दुर्ग जिले के राष्ट्रपति

पुरस्कार प्राप्त प्रधानाध्यापक श्री रामकुमार वर्माजी से | वर्तमान में श्री रामकुमार वर्माजी दुर्ग जिले के शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, अकलोरडीह स्कूल में प्रधानाध्यापक की जिम्मेदारी निभा रहे हैं | इन्होंने अपने शौक के रूप में गाँव देहात में मिलने वाले खिलौनों को लेकर उनके कार्य करने के तरीकों को देखकर, सूक्ष्म-अध्ययन कर बच्चों को उन खिलौनों के पीछे छिपे विज्ञान की अवधारणाओं को समझाने का प्रयास किया | उनके पास लगभग ३० से अधिक स्थानीय खिलौनों के पीछे छिपी अवधारणाओं को प्रदर्शित करने का संग्रह है | आप बैठक के दौरान अपने शिक्षक साथियों से इनकी बात करवाने इनके मोबाइल नंबर 8827378469 से संपर्क कर सकते हैं|

आपhttp://www.arvindguptatoys.com/toys.html से भी बहुत से खेल खिलौनों की जानकारी लेकर अपने संकुल की शालाओं में स्वयं तैयार कर सकते हैं | इस वेबसाईट का लाभ अवश्य उठाएं |

चर्चा क्र. ६: इस माह के लिए सर्वे

आपको विदित ही है कि नई शिक्षा नीति के निर्माण हेतु विभिन्न स्तरों पर चर्चाओं का आयोजन किया जा रहा है |इस माह आपको इस नीति के निर्माण के दौरान चर्चा हेतु तैयार कुछ प्रश्न उपलब्ध कराए जा रहे हैं | अपने संकुल के अन्य शिक्षकों के साथ आपस में चर्चा कर अपने सामूहिक राय से हमें ईमेल से अवगत करावें |

१. एक अच्छे शिक्षक में क्या क्या गुण होने चाहिए ?
२. अच्छे शिक्षक तैयार करने में क्या क्या बाधाएं हैं ?
३. आपके विचार से शिक्षकों को कौन सी शिक्षण विधि अपनानी होगी ताकि बच्चे बेहतर सीख सके ?
४. विद्यालयों में सी.सी.ई. के अतिरिक्त बच्चों के मूल्यांकन के लिए आप कौन कौन सी विधियां अपनाना चाहेंगे ?
५. शिक्षकों की अनुपस्थिति की समस्या से कैसे निपटा जा सकता है ?
६. शिक्षकों को अधिक जिम्मेदार बनने के लिए प्रेरित करने के क्या उपाय किए जाएँ ?
७. शिक्षक प्रशिक्षकों के गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए अपने सुझाव दें |
८. बच्चों को उनकी अपनी भाषा में शिक्षा देने हेतु क्या क्या उपाय किए जाने चाहिए ?
९. बच्चे के संपूर्ण स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए संकुलों के विद्यालयों में क्या क्या कदम उठाने चाहिए ?
१०. शान्ति एवं मूल्य शिक्षा के लिए किस प्रकार की सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए ?

इनके अलावा भी नई शिक्षा नीति के लिए आपके संकुल से जो भी सुझाव हों, आप निःसंकोच भेजने की व्यवस्था करें| आप अपने संकुल की राय mygov.in वेबसाईट में पंजीकृत कर भी दे सकते हैं | संकुल में से किसी को इस वेबसाईट में अपने संकुल को जोड़ने के लिए प्रेरित करें ताकि शासन की विभिन्न योजनाओं से सीधे आप जुड़ सके |

चर्चा क्र. ७: बातें देश-दुनिया की

आज के दौर में जब हम बच्चों के उपलब्धि की चर्चा करते हैं तो फिनलैंड नामक देश सबसे आगे और बेहतर माना जाता है | हम यदि फिनलैंड और दूसरे विकसित देशों जैसे अमेरिका में पढाई के स्तर के अंतर को देखें तो दोनों देशों में अच्छा और बुरा पढाने वाले शिक्षक हमको मिल जाएंगे| फिनलैंड ने जो मूलमंत्र अपनाया और पूर्ण विश्वास के साथ पालन किया वह है- “Less is More.” यही राष्ट्रीय मूलमंत्र फिनलैंड के जन-जन के mind set में बसा हुआ है और वहाँ की Education Philosophy का guiding principal है| उनकी यह मानसिकता उनके जीवन के हर पहलू में दिखाई देती है | वे उतना ही बड़ा घर बनाते हैं जितनी कि उनको आवश्यकता है | वे अपनी आवश्यकता से अधिक अनावश्यक सामान नहीं खरीदते | वे ढेर सारे सस्ते कपडे खरीदने के बदले गिनती के और अच्छे, महंगे कपडे खरीदने में विश्वास करते हैं जो कि टिकाऊ हो | उनकी गाडियां भी जरूरत से ज्यादा बड़ी नहीं होती | वे सही मायनों में Less is More पर विश्वास करते हैं |

हमारे जैसे अन्य देश ऐसा मानते हैं कि शिक्षा से जुडी सभी समस्याओं का हल ज्यादा और ज्यादा यानि “More ” ही है |“everything can be solved with MORE classes, longer days, MORE homework, MORE assignments, MORE pressure, MORE content, MORE meetings, MORE after school tutoring, and of course MORE testing! All this is doing is creating MORE burnt out teachers, MORE stressed out students and MORE frustration. ” जबकि फिनलैंड में इसके ठीक विपरीत Less = More ही सोचा जाता है |

1. Less Formal Schooling = More Options
2. Less Time in School = More Rest
3. Fewer Instruction Hours = More Planning Time
4. Fewer Teachers = More Consistency and Care
5. Fewer Accepted Applicants= More confidence in Teachers
6. Fewer Classes= More Breaks
7. Less Testing = More Learning
8. Fewer Topics = More Depth
9. Less Homework = More Participation
10. Fewer Students = More Individual Attention
11. Less Structure = More Trust

यह लेख हमें Ed.CIL, New Delhi के Pedagogy शाखा के सौजन्य से प्राप्त हुआ है | इस लेख को जो भी पढ़ना चाहे, वे हमारे वेबसाईट में जाकर इसकी जानकारी ले सकते हैं |

चर्चा क्र. ८:संकुल के लिए सूचनाएं

NCERT, नई दिल्ली व्दारा स्कूलों में हरियाली से संबंधित अध्ययन किया जा रहा है | यदि आपके संकुल के किसी स्कूल में Greening of School पर बहुत अच्छा कार्य किसी स्कूल ने किया हो तो उसका विवरण भेजें | बेहतर प्रविष्टियों को हम NCERT भेजेंगे जहां से कुछ चयनित स्कूलों में उनकी और से दस्तावेजीकरण का कार्य किया जाएगा |

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु किसी जिले या संकुल में कोई विशेष कार्य हुआ हो तो उसे हमारे साथ ईमेल के माध्यम से शेयर करें | हम Best Practices के रूप में उसे सबके साथ शेयर करने का प्रयास करेंगे |

हाल ही में राज्य साक्षरता मिशन व्दारा राज्य स्तरीय कुशल स्त्रोत व्यक्तियों के चिह्नांकन के लिए एक स्क्रीनिंग परीक्षा का आयोजन किया गया था | आपके संकुल में विभिन्न विषयों के अध्यापन में एक्टिव लर्निंग पद्धति का नवाचारी उपयोग करने वाले शिक्षकों से उनके व्दारा उपयोग किए जाने वाले उदाहरणों की पी.पी.टी. हमारे साथ शेयर करें | जिले में ऐसे ही कुशल शिक्षकों को एक्टिव लर्निंग के लिए स्त्रोत व्यक्तियों के रूप में चिह्नांकित करें |

अपने अपने क्षेत्र में कोई शिक्षक या संकुल समन्वयक कुछ बेहतर कार्य कर रहे हों तो उनकी जानकारी हमारे साथ शेयर करें | हम उन्हें अपने आगामी माहों के अंकों में स्थान देने का प्रयास करेंगे | आप अपने लेख एवं कार्टून आदि भी हमारे साथ शेयर कर सकते हैं |

आपने अपने यहां Professional Learning Community (PLC) का गठन कर कार्य प्रारंभ कर लिया हो तो उसका विवरण भी हमारे साथ शेयर करें |

चर्चा क्र. ९:चित्र पर चर्चा

आजकल हर कोई अध्यापन को सबसे सरल काम मानता है और मौका देखते ही पढ़ाना या लेक्चर देना शुरू कर देता है | पर वास्तव में सुदूर अंचलों में पढ़ाने वाले हमारे शिक्षक भाई ही जानते हैं कि सही मायने में पढ़ाना या बच्चों को समझा पाना कितना कठिन और मेहनत वाला काम है | हमारे सरकारी स्कूलों में आने वाले बच्चों को घर पर अध्यापन में कोई विशेष सहयोग अथवा माहौल नहीं मिल पाता | हमें

संकुल समन्वयक के रूप में अपने शिक्षकों को इस कार्य में आवश्यक सहयोग देने का महती उत्तरदायित्व है | अपने संकुल में शिक्षकों के साथ चित्र पर चर्चा कराने कुछ बिन्दुओं को लिया जा सकता है:

- शिक्षक अपनी कक्षा का प्रबंधन कैसे करें ? कक्षा प्रबंधन में किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?
- कक्षा एवं स्कूल में पढाई का माहौल कैसे बनाया जाए ?
- कक्षा में बिना डराए एवं सज़ा दिए अनुशासन कैसे विकसित किया जा सकता है ?
- शिक्षक समुदाय एवं बच्चों के बीच अपने पद का सम्मान कैसे प्राप्त कर सकता है ?

चर्चा क्र. १०: आगामी माह के लिए कार्य

गत माह दिए गए कार्यों के आधार पर आपसे जानकारी का इंतजार है | उम्मीद है की आप इसे तैयार कर शीघ्र ईमेल से हमें भेजेंगे | इस माह की बैठक में और आगामी माह के लिए आपको कक्षावार निम्नलिखित गतिविधियाँ अपने कुशल सहयोगी मित्रों एवं PLC के माध्यम से कराए जाने का सुझाव है:

१. बच्चों को उनके नाम पट्टिकाओं को नियमित लगाने देने से अब उन्हें अपने अपने नाम पट्टिकाओं को पहचानना आ जाना चाहिए | शाला अवलोकन के दौरान देखें |
२. बच्चों से करवाए जा रहे सुलेख, श्रुतलेख आदि की जानकारी बच्चों की कापी देखकर लेवें और इसे नियमित रूप से करवाएं | रीडिंग कार्नर के नियमित उपयोग की भी समीक्षा करें |
३. उच्च प्राथमिक स्तर के लिए चयनित शिक्षकों से निकट के स्कूल में सक्रिय शिक्षण आधारित आदर्श पाठ का आयोजन करवाएं और शिक्षकों के साथ मिलकर समीक्षा करें | आगामी माह के लिए अभी से तय करें |